

Rob Linrothe, Associate Professor Emeritus

Recent fieldwork on both sides of the Nepal-India border region and local news coverage.

In February and March 2025 I engaged in fieldwork in Nepal and in Bihar in northeast India. In both places, local newspapers sent reporters to cover the visits—slow news days I guess. The one below was in a Nepalese newspaper, depicting work documenting 9<sup>th</sup> to 12<sup>th</sup> century sculptures now preserved at a temple in Simraongarh, an old capital of a Mithila (Bihar) dynasty.

## अमेरिका व दिल्ली से शोध करने पहुंची टीम

पुरातात्विक खोदाई में भारत-नेपाल के लोगों की आस्था से जुड़ी सामग्री पर होगा शोध

जागरण संवाददाता, रक्सौल : भारत-नेपाल सीमा के बारा जिला के सिमरौनगढ़ में नेपाल पुरातात्विक खोदाई में दोनों देशों के लोगों की आस्था से जुड़ी सामग्री पर शोध करने के लिए अमेरिका व दिल्ली से विशेषज्ञों की टीम पहुंची। नाथ आर्ट एंड रिसर्च संस्थान के प्रो. रबनाथ और दुर्लभ प्रतिमाओं पर अमेरिका में पीएचडी सुशीमता रंजन दो दिन पूर्व नेपाल पहुंचे। इस दौरान नेपाल की राजधानी काठमांडू में नेपाल पुरातात्विक विभाग के द्वारा अलग-अलग स्थलों पर की गई खोदाई की जानकारी ली। इसके उपरान्त स्थल निरीक्षण व खोदाई में मिली सामग्रियों की तस्वीर व वीडियो बनाकर कैमरे में कैद किया। नेपाल में किये गए शोध की मिथिला भारती आर्ट एंड क्राफ्ट में प्रकाशित किया जाएगा। इसको लेकर भारतीय शोधकर्ता अलग-अलग बिन्दुओं पर शोध कर रहे हैं। बता दें कि नेपाल सरकार ने 32 वर्षों बाद बीते वर्ष 22 नवंबर 2024 में बारा जिला के सिमरौनगढ़ में पुनः खोदाई की। इस



नेपाल में स्थानीय लोगों से जानकारी लेते विशेषज्ञ जागरण

खोदाई के दौरान कर्णटाराज वंश की कुल देवी तुलजा भवानी प्राचीन मंदिर का अवशेष मिला है। जिसके रनिवास के पीछे मंदिर के 24 स्वयंभू मंदिर क्षेत्र में उत्खनन हुई है। तिरहुत की राजधानी, कर्नाट वंश से भी जुड़ी है। वहां खोदाई में तुलजा भवानी के अति प्राचीन मंदिर की दीवार मिली थी। तुलजा भवानी यहां के शासकों की कुल देवी थीं। इस

खोदाई टीम में नेपाल पुरातत्वविद देवेन्द्रनाथ तिवारी, पुरातत्व अधिकृत हरिप्रसाद भुसाल व छविकार नर्मदा श्रेष्ठ आदि शामिल थे। महज चार फीट गहरी खोदाई में मंदिर की शिखरशैली, अमलख, दो से तीन फीट के गुम्बज के अलावा ईंट, पत्थर, मिट्टी का दीप आदि मिला है। इसके अलावा दीवार व जमीन पर लाल व हल्के उजले ईंट



नेपाल में मिली प्रतिमा की तस्वीर लेते दिल्ली से आए शोधकर्ता जागरण

की सोलिंग मिल रही थी। इतिहासकार डॉ. सिंह उर्फ देवेश कुमार सिंह के अनुसार 1326 ईसवी में राजा हरि सिंह देव उर्फ सेवई सिंह राजा थे। तुगलक वंश के ग्यासुदीन से बचने के लिए वहां से काठमांडू चले गए। काठमांडू के भक्तपुर के मल्ल राजा की पुत्री से शादी कर कुल देवी को वहीं स्थापित किया था।

The photo on the right of the article was at the Hariharpur Kaleswanta temple where I photographed a finely detailed depiction of the emaciated wrathful goddess Cāmuṇḍā.



In Patna, the capital of Bihar state, I visited for the first time the museum in the Department of Ancient Indian History and Archaeology of the University of Patna. where I was also tailed by a reporter as some of the professors walked me through sculptures they'd excavated.



पटना 05-03-2025

## यूएस के प्रो. रॉब ने पीयू के पुरातत्व विभाग के म्यूजियम को देखा दुर्लभ पांडुलिपियों, प्राचीन ग्रंथों एवं ऐतिहासिक शोध सामग्री के समृद्ध संग्रह को देखा

एजुकेशन रिपोर्टर . पटना

नॉर्थवेस्टर्न विश्वविद्यालय, एवैस्टन, अमेरिका के कला इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान प्रो. रॉब लिनरोथे ने मंगलवार को पटना विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग का दौरा किया। उन्होंने वहां मौजूद म्यूजियम को भी देखा और उसकी तारीफ की। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष डॉ. मो. सईद आलम, प्रो. नवीन कुमार, प्रो. बदर आरा, डॉ. ब्रजेश सिंह, डॉ. मनोज, डॉ. दिलीप, डॉ. मंदीप, डॉ. अरुण, डॉ.



अशेष, डॉ. राहुल कान्त, दारोगा प्रसाद यादव, मदन पाण्डेय सहित विभाग के समस्त शिक्षकों, शोधार्थियों एवं कर्मचारियों ने प्रो. लिनरोथे का गर्मजोशी से स्वागत किया।

प्रो. लिनरोथे ने सर्वप्रथम विभाग के वीपी सिन्हा पुस्तकालय का भ्रमण किया, जहां उन्होंने दुर्लभ पांडुलिपियों, प्राचीन ग्रंथों एवं ऐतिहासिक शोध सामग्री के समृद्ध संग्रह को देखा और

इसकी उपयोगिता की सराहना की। यह पुस्तकालय भारतीय इतिहास, पुरातत्व, कला, स्थापत्य एवं संस्कृति पर केंद्रित अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों का भंडार है, जो शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। इसके बाद उन्होंने विभागीय संग्रहालय का भ्रमण किया, जहां विभाग द्वारा उत्खनित विभिन्न पुरास्थलों से प्राप्त अत्यंत महत्वपूर्ण पुरावशेष संग्रहीत हैं। उन्होंने अन्तिचक्र (विक्रमशिला), चम्पा, कुम्हारार और चिरांद जैसे पुरास्थलों से प्राप्त ऐतिहासिक धरोहरों का निरीक्षण किया।

There I measured and photographed a ca. 11<sup>th</sup> century sculpture of the crowned Buddha surrounded by episodes in his life, as well as an effigy on the pedestal of the sponsor who commissioned the sculpture. The Buddha's head—even the nose—was intact, quite rare.





In Lakhisarai, Bihar, near the south bank of the River Ganga, I visited a school with a 12<sup>th</sup> century sculpture of a goddess in the dining hall. Escorted by the Headmistress, and given a tour of the art studio by the art teacher, we were once again followed by a reporter.

प्रभात खबर

लखीसराय जिला

## अमेरिका के नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर ने बालिका विद्यापीठ का लिया जायजा अमेरिकी प्रोफेसर ने पुस्तकों की ली जानकारी

□ प्रोफेसर लिनरोथे ने छात्रावास की छात्राओं से भी किया संवाद  
प्रतिनिधि, लखीसराय

प्रसिद्ध बालिका विद्यापीठ में अमेरिकी के प्रतिष्ठित नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर लिनरोथे ने पंच विद्यालय का भ्रमण करने के साथ ही इसके ऐतिहासिक महत्व पर भी चर्चा की। प्रोफेसर लिनरोथे और माजोरी योनिगर्ग कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंसेज में एसोसिएट प्रोफेसर और डिपार्टमेंट चेरम हैं तथा आर्ट हिस्ट्री विभाग से जुड़े हुए हैं।

इस दौरान उनके साथ आये आइआइटी गुवाहाटी के पीएचडी एचएसएसमी विभाग के इशान हरित, दिल्ली आर्ट गैलरी की सुमिता नंदिनी तथा फिल्म निर्माण रविराज पटेल ने विद्यालय का भ्रमण किया। प्रोफेसर लिनरोथे एक प्रख्यात शोधकर्ता भी हैं, अपने पुरातत्व और कला इतिहास से जुड़े शोध के लिए विद्यालय में आये थे, उन्होंने विद्यालय के ऐतिहासिक स्थलों का अवलोकन किया और इनके संरक्षण के महत्व पर चर्चा की।

विद्यालय पहुंचने पर प्रोफेसर लिनरोथे ने छात्रावास की छात्राओं से संवाद किया और उनके शैक्षणिक अनुभवों को साझा किया। वहीं उन्होंने



स्कूल के पुस्तकालय पहुंचे अमेरिकी यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर रॉब लिनरोथे, साथ में प्राचार्य कविता सिंह व अन्य।

### पुस्तकालय भ्रमण व धरोहर संरक्षण पर चर्चा

प्रोफेसर लिनरोथे ने विद्यालय के पुस्तकालय का भ्रमण किया, जहां उन्होंने वर्षों पुरानी दुर्लभ पुस्तकों को देखा और उनके संरक्षण के महत्व पर चर्चा की। उन्होंने सुझाव दिया कि इन ऐतिहासिक पुस्तकों को तबे समय तक सुरक्षित रखने के लिए डिजिटलीकरण (डिजिटल आर्काइविंग) एक प्रभावी उपाय हो सकता है। उन्होंने कहा कि पुरानी ऐतिहासिक वस्तुएं और साहित्य हमारी अमूल्य धरोहर है, और इनका रखरखाव करना हमारी वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने जोर दिया कि

### उत्तर पहाड़ी पर शोध के लिए पहुंचे अमेरिकी प्रोफेसर

कजारा, क्षेत्र अंतर्गत उत्तर पहाड़ी जहां वर्ष 2016-17 व 2017-18 में पुरातत्व विभाग द्वारा खुदाई का कार्य किया गया था, जहां दो वर्ष तक खुदाई का कार्य चला, इस दौरान यहां भगवान बुद्ध के आने के कई सारे प्रमाण मिलने की बात कही गयी थी, वहीं इसे लेकर सोमवार को अमेरिका स्थित नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी में कला इतिहास विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर रॉब लिनरोथे, आइआइटी गुवाहाटी से पुरातत्वविद इशान हरित व दिल्ली आर्ट गैलरी की कला इतिहासकार सुमिता नंदिनी द्वारा उत्तर पहाड़ी पहुंचकर वहां पहाड़ी पर बुद्ध के पैरों के निशान, बौद्धिष्टों के बैठक मुद्र के चित्र के साथ-साथ वरमि अभिलेख को देखा व फोटो लिया, इतना ही नहीं इन लोगों ने वरमि में लिखे शब्दों के बारे में आपस में चर्चा भी की। साथ ही उत्तर पहाड़ी पर मन्नत स्तूप होने का भी विश्लेषण किया, इन लोगों ने पहाड़ पर एक घंटा समय दिया, जिसमें पूरे पहाड़ पर उफरे गये नक्काशी व लेख को देख चर्चा की।



खुदाई कार्य को देखने एसोसिएट प्रोफेसर

उत्तर पहाड़ी पर बने स्तूप की नक्काशी क्षेत्र की कलाइयों तथा यही संस्कृति को अहमता से समझा जा सकता है, यह नक्काशी पूर्वी बिहार में बौद्ध कला व वास्तुकला की खास शैली को दिखाती है, रॉब लिनरोथे, एसोसिएट प्रोफेसर, कला इतिहास विभाग, नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी

यहां मिली कलाकृतियां व अवशेष से खफ पता चलता है कि उस समय बौद्ध धर्म स्थान में लोकप्रिय था, इशान हरित, पुरातत्वविद आइआइटी गुवाहाटी

यहां बौद्ध धर्म का लोग तो खफा दिख रहा है, खय ही उस समय यहां के लोगों पर इसका अत्यंत प्रभाव रहा होगा, इतनी बड़ी मात्र में यहां पहाड़ों पर बने नक्काशी यह खफ-खफ दर्शाते हैं, सुमिता नंदिनी, कला इतिहासकार दिल्ली आर्ट गैलरी



पौराणिक क

माउंट लिट गया पौध

प्रति

पर्यावरण सं जागरूकता 1 स्थानीय माउंट फ्रिड कोरेंस 'एक पेड़ मां' पौराणिक का गया, मौके 1 अभियान प्रथ गया था, जि संवेदनशील सम्मान के सा

इस आ व्यक्ति अपनी लगाकर न के है, बल्कि आ उधार भी 3 स्थानीय माउंट चेयरमैन माउ विजेता स्नेही, रविर्जन, तव

लखीसराय जिला

बंगीपर रेलवे स्टेशन पर

लखीसराय जिला

Tuesday, March 4, 2025  
Lakhisarai  
https://paper.prabhatkhabar.com/c/1p/674024027934800675461



The goddess holds a child on her lap, and was commissioned by a female sponsor, depicted on the right side of the pedestal.



I and two advanced archaeology graduate students who accompanied me were also followed by the reporter and photographer to the village of Uren, which has Buddhist rock carvings and inscriptions.



खुदाई कार्य को देखते एसोसिएट प्रोफेसर .



There were a few buildings in the village that had fragments of sculpture embedded in the walls to keep them from being stolen.

We were accompanied in this area by an armed policeman in camouflage fatigues (at center below), assigned by the District Commissioner to escort us as in past years there had been some insurrections.



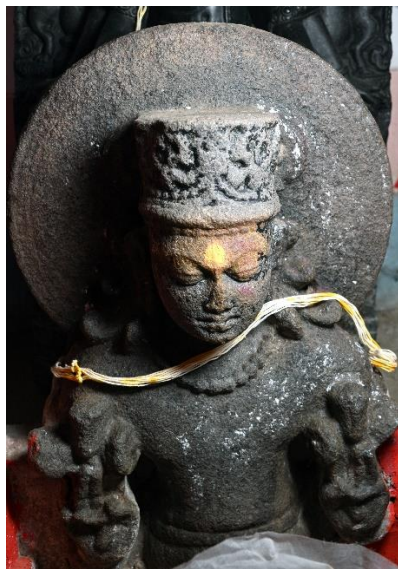


When I went to Jiyar Village near Bihar Sharif with Professor Elora Tribedy of Nalanda University, we were deluged not by reporters but by curious and watchful villagers. Although at first suspicious—having had thefts of their precious religious sculptures in the past—they were soon won over, thanks in part to showing them my *Reenchantment* book published through support by the Department and a Warnock Publication grant. Ultimately we were welcomed in shrines and homes. I once again found several examples of sponsor figures, including couples on the pedestals of large sculptures in worship.





A visit to a Sun Temple complex of Deo Varunak resulted in a similar scenario—villagers and the headman-mayor (in the green shirt below) crowded around and were justifiably proud of their ancestral legacy.



Among the dozens of sculptures preserved, some dated back to the fifth or sixth century (above left), while a Sun-God attendant on a different sculpture wears a tunic, helmet and boots that some scholars suggest derived from the images of Persian immigrants to India who were originally devotees of Mithra, a Zoroastrian Sun God.